शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -7
May
2024

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम के प्रभाव का अध्ययन

[1]डॉ. संध्या शर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय,
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, (राज.)

[2]सरिता यादव
JVR-2220 Enroll Number-JVR-1/22/10019

प्रस्तावना

मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक शिक्षा की आवश्यकता रहती है। प्रत्येक समय मनुष्य को शिक्षा का प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य का अस्तित्व बिना शिक्षा के उसी प्रकार है जिस प्रकार बिना पतवार के नाव होती है। शिक्षा व्यक्ति के प्रत्येक पहलू को विकसित करके उसका चारित्रिक निर्माण करती है। व्यक्ति के व्यवहार, विचारों, भावनाओं, तथा ज्ञान की वृद्धि में सहायक होती है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा सिर्फ मनुष्य और पशु में ही अंतर स्थापित नहीं कर सकते बल्कि मानव का मानव से भी अंतर का पता चलता है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण करती है, चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है। व्यक्ति को संस्कारित करती है। शिक्षा स्वयं को व अपनी शक्तियों को पहचानने की क्षमता का विकास करती है। शिक्षा सीखना नहीं है, वरन मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास और विकास है।

मुदालियर एवं कोठारी आयोग (1964) ने शिक्षा के उद्देश्य में जनतंत्रात्मक नागरिकता की भावना का विकास, व्यक्तित्व का विकास, नेतृत्व का विकास, राष्ट्रीय भावनात्मक एकता, विश्व–बंधुत्व तथा अंतर्राष्ट्रीय भावना, सच्ची देशभक्ति, जीवन के मूल्य तथा दिशा का निर्माण, प्रतिभाओं, की खोज और आदर, वैज्ञानिक एवं व्यवसायिकता का मूल्यांकन को प्रमुखता से वर्णित किया है।

शब्द बीज
शिक्षा, अस्तित्व, संस्कार, भावना, देशभक्ति, नैतिक मूल्य।

साहित्य समीक्षा

लियोनोफ डेबोरे, जे. (1993) ने बालकों की शिक्षण उपागम में व्यक्तित्व कारकों और अभिभावकों के सहयोग का अध्ययन किया है। जिसमें पाया कि उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रों की तुलना में निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्र स्वयं को अभिभावकों से उपेछित महसूस करते हैं। निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों में व्यक्तित्व कारकों के मध्य विभिन्नता थी।

स्टेफेंस एवं स्काबेन (2002) ने अपने अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी सह–पाठ्योकार गतिविधि में भाग लेते हैं उनका औसत ग्रेड पॉइंट 3.0 अथवा उससे अधिक होता है। अपेक्षाकृत जो अन्य गतिविधियों में भाग नहीं लेते। अकादमिक प्रदर्शन से तात्पर्य यह भी होता हे कि पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यार्थी किन–किन गतिविधियों में भाग लेता है यथा–खेल–कूद, वाद–विवाद प्रतियोगिता, कार्टून बनाना, स्केचिंग, नृत्य करना, संगीत,मेहंदी, कृषि कार्यों में रूचि लेना आदि। इन सबको पाठ्येार गतिविधि कहा जाता है।

गर्ग, चित्रा (1997) ने उच्च माध्यमिक स्तर अनुउर्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बधों, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा मायोजन का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होनें पाया कि पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन के मध्य संबंध होता है।

रेखा एवं कपूर, माला (1998) ने उच्च माध्यमिक स्तर पर बालकों की शैक्षिक क्रियाओं में माता–पिता की सहभागिता का अध्ययन किया। परिणाम मे पाया कि माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पथ प्रदर्शन बालकों के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता है।

ब्रोह (2002) ने अकादमिक प्रदर्शन, पाठ्योत्तर गतिविधि, ग्रेड पॉइंट, शैक्षिक आकांक्षा एवं स्कूल उपस्थिति को लेकर अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होनें पाया कि जो विद्यार्थी पाठ्योत्तर गतिविधि में भाग लेते हैं उनका औसत ग्रेड अंक, उच्च शैक्षिक आकांक्षा, स्कूल उपस्थिति में वृद्धि और अनुपस्थिति में कमी पाई गई।

ओसांग (2003) ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन में गणित और आत्म–संप्रत्यय का अध्ययन किया, अपने अध्ययन में उन्होनें पाया कि विद्यार्थियों का गणित में प्रदर्शन उनके आत्म–संप्रत्यय पर निर्भर करता है, जो कि यह उनके गणित की उपलब्धि पर निर्भर करता है कि वो गणित को एक विषय के रूप में कैसे सोचतें हैं। गणित को किस संदर्भ में लेते हैं।

वर्मा, श्रीमती अनुराधा (2007) ने उच्च माध्यमिक स्तर के निम्न निष्पादन प्राप्त विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों व व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन किया। परिणाम में पाया कि निम्न निष्पादन के विद्यार्थी तथा उच्च निष्पादन के विद्यार्थी के नैतिक मूल्यों व व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

दबे शैली (2007) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरुचि का अध्ययन किया और निष्कर्ष पाया कि नौकरी के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थी अलग–अलग अभिवृत्ति दिखातें हैं, जबकि 12वीं व्यापार के प्रति उनकी अभिवृत्ति समान है।

मौला, जे. एम. (2010) ने कक्षा 12वीं स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और गृह वातावरण के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि गृह वातवरण (पिता का व्यवसाय, माता का व्यवसाय, पिता की शिक्षा, माता की शिक्षा, परिवार का आकार, घर में पढ़ने की सुविधा) तथा शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा की बीच सकारात्मक संबंध होता है। छात्र के गृह वातवरण के प्रकार पर छात्र की अभिप्रेरणा और शैक्षिक कार्य की प्रगति निर्भर करती है।

एत्से एवं अन्य (2004) ने घाना शिक्षण उपागम् के सरकारी एवं निजी विद्यालय के शिक्षण उपागम का अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होनें पाया कि घाना के निजी विद्यालय का अकादमिक प्रदर्शन अच्छा होता है, अपेक्षाकृत सरकारी विद्यालय के। इसका कारण यह है कि निजी विद्यालय में कार्य का पर्यवेक्षण बहुत ही प्रभावी ढंग से होता है।

त्रिपाठी, कुमुद (2004) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग, परिवेश व उपलब्धि अभिप्रेरणा पर कार्य किया और पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा का अधिक प्रभाव पड़ता उच्च है, जबकि लिंग एवं परिवेश का प्रभाव नहीं पड़ता है।

चरण, अर्चना (2005) ने वरिष्ठ उच्च माध्यमिक स्तर के ने विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया, इनके अध्ययन का उद्देश्य उच्च, मध्यम एवं निम्न शैक्षणिक स्तर के विद्यार्थियों की पहचान करना था। अध्ययन में उन्होनें पाया कि उच्च, मध्यम, तथा उच्च एवं और निम्न तथा मध्यम व निम्न शैक्षणिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई अंतर नहीं है।

जॉन होल्ट (2009) ने अपनी पुस्तक 'बच्चे असफल कैसे होते हैं?' माध्यम से बच्चों की असफलता के कारणों को बताया। पैतेरेबाजी के अंतर्गत उन्होनें बताया है कि बच्चे कक्षा में अनेक प्रकार कि युक्तियों को अपनातें हैं जिससे वे अध्यापकों के प्रश्नों से बच सकें। साथ ही उन्होने बताया है कि बच्चे किस प्रकार कक्षा में अध्यापको से डरते हैं। बच्चों को सफल करने के लिए अध्यापक उन्हें अनेक प्रकार से डराते हैं।

जॉन होल्ट (2010) ने अपनी दूसरी पुस्तक 'असफल स्कूल' में स्कूल की असफलता के कारणों को बताया है कि प्रत्येक बच्चा स्वतंत्र रूप से रहना चाहता है, उसे अपनी दुनिया को सीखनें की एक अलग ललक होती है। शिक्षा कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई दूसरा ले सकें। यह एक ऐसी चीज है जिसे व्यक्ति को खुद हासिल करना होता है। शिक्षकों को यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि स्कूल बच्चों को कैसा लगता है। स्कूल में पहली बार अपने वाला बहुत ही जिज्ञासु, और सीखने के लिए उसमें भरपूर ऊर्जा होती है।

सेठी, नीतू (2011) ने उच्च माध्यमिक स्तर विद्यालय के विद्यार्थियों का गणित में शैक्षिक उपलब्धि का गणितीय अभिक्षमता से संबंध का अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थियों की उपलब्धियों और गणितीय अभिक्षमता में कोई सार्थक संबंध नहीं होता, विद्यार्थियों में गणितीय अभिक्षमता का उच्च और निम्न स्तर तथा गणित में उपलब्धि कोई सार्थक अंतर नहीं होता, राजकीय एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की गणितीय अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता। अभिभावक सहभागिता एक महत्वपूर्ण कारक है जो कि बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन को बढ़ाने में मदद करती है

(हारा – बुर्के, 1998; हिल – क्राफ्ट, 2003; मक्रोन, 1999; स्टीवेंस – बेकर, 1987)

शोध का महत्व

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर जो भी शोध कार्य हुए हैं, उनमें उनके अकादमिक उपलब्धि को लेकर। कार्य किया गया है। सिर्फ माध्यमिक स्तर पर ही नहीं अपितु विद्यार्थियों पर जो भी कार्य हुए है, सभी में उनकी अकादमिक उपलब्धि को मापा गया है, जो कि विद्यार्थियों के प्रदर्शन का पैमाना नहीं है, यह तो सिर्फ शैक्षणिक उपलब्धि है। जो विद्यार्थियों के मध्य प्रतियोगिता की भावना का विकास करता है। प्रस्तुत शोध अध्यन में विद्यार्थियों के सिखने के प्रदर्शन के प्रति उनके अभिभावक क्या सोचतें हैं, विद्यार्थियों के शिक्षकों का उनके अकादमिक प्रदर्शन के प्रति क्या दृष्टि है का अध्ययन करना है।

उद्देश्यः

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार के प्रति उनके शिक्षण उपागम के प्रभाव का अध्ययन करना है।
2. सरकारी और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार के प्रति उक्त भागीदारों की दृष्टि में अंतर है या नहीं। यदि अन्तर है तो किस प्रकार का अंतर है।

शोध प्रश्न

1. सरकारी और निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थी सीखने को लेकर कितने गम्भीर है।
2. शिक्षण उपागम के संज्ञानात्मक, भावात्मक और संक्रियात्मक क्षमता को किस प्रकार और कितना प्रभावित करता है।

परिकल्पना

1. शिक्षण उपागम की व्याख्या के विभिन्न आयामों पर सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थियों पर अलग–अलग प्रभाव पड़ता है।
2. सीखने के विभिन्न आयामों पर सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थियों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मूल्यांकन

उच्च माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 17 वर्ष के बीच की आयु के लिए होती है। इसमें शिक्षा का बल सीखनें के आधारभूत साधनों, अभिव्यक्ति और अवबोध से हटना शुरू हो जाता है। बल का कें अब इस बात की खोज करने पर होता है कि इन साधनों का उपयोग विचार और जीवन के क्षेत्रों में किस प्रकार किया जा सकता है। किशोर अब सूचनाओं, संप्रत्ययों, बौद्धिक कौशलों, अभिवृत्तियों, सामाजिक–शारीरिक–बौद्धिक आदर्शों, आदतों, अवबोध आदि की खोज करने लगता है और उन्हें अपनाने की कोशिश करता है इसमें प्रायः विद्यार्थी की आवश्यकताओं और रुचियों के आधार पर विभेद किया जाता है। यह शिक्षा अपने आप में पूर्ण भी हो सकती है। आगे की शिक्षा के लिए तैयार करने वाली भी हो सकती है। विद्यार्थियों के अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके माता–पिता की उनके शैक्षिक मामलों या कार्यों की रुचि से जुड़ी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्रा. डा. एम. के. (2009): समायोजनात्मक, मनोविज्ञान नईदिल्ली : अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
2. पाठक. पी. डी. (2011): शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. गुप्ता डा. रेणु (2007): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, नईदिल्ली : जगदम्बा पब्लिकेशन कम्पनी।
4. सिंह गया तथा राय, अनिल कुमार (2013), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ आर. लाल. बुक डिपो मेरठ जी.सी. (2011) अध्यापक शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2
5. लीला, ए.वी. एस. (1998) महाविद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व लक्षणों के संदर्भ में धार्मिकता व समायोजन का अध्ययनः भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वाल्यूम 16, संख्या 1 जून–जुलाई, 1998
6. शोध पत्रावली।